"धर्म की अंधभक्ति आपको सिर्फ मरना सिखाती है, लड़ना नहीं!"

इसका जीता-जागता उदाहरण है महिला का ऐतिहासिक रोल, एक खाप रुपी लोकतंत्र में और दूसरा राज रुपी राजतन्त्र में? मेरे लिए कोई सा भी रोल छोटा नहीं, परन्तु ज्यादा अच्छा कौनसा था, यह मैं पाठकों पर छोड़ता हूँ|

राजतंत्र में महिलाओं का ऐतिहासिक रोल:

1) अलाउद्दीन खिलजी की सेना से धर्म और कुल की रक्षा करने के लिए चित्तौड़ की रानी और 26000 राज वीरांगनाओं ने अग्नि कुंड में कूदकर जौहर प्रथा (सतीप्रथा) निभाई।

2) बहादुर शाह जफ़र की चित्तौड़ पर आक्रमण के बाद फिर मुगलों से धर्म और स्वाभिमान रक्षा के लिए चितौड़ की रानी ने 18000 राज स्त्रियों के साथ अग्निकुंड में कूद जोहर (सतीप्रथा) करना चाहा पर लकड़ी कम पड़ने के कारन बारूद के ढेर के साथ वीरांगनाओ ने खुद को उड़ा दिया।

3) मुहम्मद जलालुदीन के आक्रमण पर चित्तौड़ में फिर महारानी ने 12000 राज स्त्रियों के साथ अग्निकुंड में कूद जोहर (सतीप्रथा) किया।

अब जरा खाप के लोकतंत्र में महिलाओं के महिला यौद्धेयायें ऐतिहासिक रोल बारे देखिये:

1) महाराजा हर्षवर्धन (थानेसर के राजा) ने अपनी बहन राज्यश्री को मालवा नरेश की कैद से छुड़ाने में खाप पंचायत की सहायता मांगी थी जिसके लिए खापों के चौधरियों ने मालवा पर चढाई करने के लिए हर्ष की और से युद्ध करने के लिए ३०००० (30000) मल्ल और १०००० (10000) वीर महिलाओं की सेना भेजी थी. खाप की सेना ने राज्यश्री को मुक्त कराकर ही दम लिया.

2) भारतीय इतिहास की सर्वप्रथम वीरांगना की गाथा, जिन्होनें मुगलों के डर से अपने सतीत्व को बचाने हेतु साक्का-जौहर (स्व अग्नि-प्रवेश) की जगह चंगेज खान की सेना को 25 कोस (लगभग 42 किलोमीटर) तक दौड़ा-दौड़ा के मारा था| ऐसी शेरनी जाटनी की जाई थी खापलैंड की अमर-अजेय सर्वखाप योद्धेया विलक्षण वीरांगना "दादीराणी भागीरथी देवी जी महाराणी"|

हरियाणा के जींद जिले की धरती की बेटी, सन 1355 में मुगलों के चुगताई वंश के चार बड़े सरदारों समेत चंगेज खान की सेना के सेनापति मामूर से अढ़ाई घंटे मल्ल्युद्ध कर उसको मौत के घाट उतारने वाली ब्रह्मचारिणी अदम्य-ज्योति खाप योद्धेया|

3) उच्च स्वाभिमानी संस्कृति-रक्षिका निडर खापबाला दादीराणी समाकौर गठवाला जी: 1600 ईस्वी के आसपास मुगलों की चलाई "कौल पूजन" की प्रथा के खिलाफ दुःसाहस कर हरियाणा की खापों से क्रांति का ऐसा बिगुल कि जिसने कलानौर रियासत की ईंट-से-ईंट बजा उसको धूल में मिला दिया, बजवाने वाली वो परिवर्तन की आंधी बन अवतारी थी आप|

4) सर्वखाप योद्धेया दादीराणी रामप्यारी जी: जब-जब तैमूरलंग के आक्रमण का इतिहास लिखा जाएगा और सर्वखाप सेनापति दादावीर जोगराज जी महाराज द्वारा उससे टक्कर लेने का वृतान्त आएगा तो दादीराणी रामप्यारी देवी जी की कहानी भी अवश्य गए जाएगी| इस लड़ाई में 40000 वीरांगनाओं की सेना थी|

5) हिन्दू धर्मरक्षिका अमर बलिदानी बृजबाला दादीराणी भंवरकौर जी: अपने अग्रज दादावीर गोकुला जी महाराज के धर्म व् मातृभूमि के नाम बलिदान के बाद मुगलों को लोहे के चने चबवाने वाली रणचंडी की अमर गाथा है यह, जिसकी तेजस्वी वीरता पर कवि के मुख से स्वर कुछ यूं फूट पड़ते हैं:

अबलाएं करती थी श्रृंगार,

वे बनी सिंहनी क्षत्राणी|

केवल श्रृंगार नहीं सूझा,

तलवार धार में था पानी|

कितने ही यवनों को काटा,

जैसे हो फसल को काट रहीं|

रणचंडी बनकर देखो वे,

अरि रक्त को चाट रहीं|

6) वीरांगना हरशरणकौर: मान गोत्र की जटपुत्री, जिसने 1837 में जमरोद (पाकिस्तान) के किले की अपनी बहादुरी से रक्षा की।

7) दादीराणी बिशनदेवी बाल्मीकि: आप चंगैजखां के विरुद्ध महिला सेना की सहायक सेनापति थी|

8) दादीराणी सोना देवी बाल्मीकि: आप अलाऊद्दीन के विरुद्ध लड़ाई में सन् 1354 में महिला सेना की सेनापति थी|

9) और यह खाप यौद्धेयायेंभी: बीबी साहिब कौर जाटनी, 10) दादीराणी सोमा देवी जाटनी, 11) दादीराणी सोना देवी जाटनी, 12) दादीराणी हरदेई जाट, 13) दादीराणी देवीकौर राजपूत, 14) दादीराणी चन्द्रो ब्राह्मण, 15 दादीराणी रामदेई त्यागी आदि-आदि|

लेखक यह नहीं कहता कि जो सति हुई उनका बलिदान कम था, परन्तु क्या अगर वो लड़ते हुए शहीद होती तो उनका बलिदान ज्यादा बड़ा ना होता? क्या लड़ते हुए मरती तो धर्म की कम रक्षा होती? और हो सकता था कि इतने-इतने हजारों की संख्या में दुश्मन पर टूटती तो जीत भी जाती; और नहीं तो दुश्मन का बहुत सा सैनिक नुकसान तो करती| परन्तु धर्म को अंधे हो के मानने ने उनको सति होना ही सर्वश्रेष्ठ पढ़ा दिया तो उन्होंने यही किया| इसलिए धर्म की अंधभक्ति से बचे|

यहां यह भी विदित रहे कि राजपूत, जाट, ब्राह्मण, गुज्जर, अहीर, बाल्मीकि इन सब में दोनों ही तरह के तंत्र पाये जाते थे, किसी में एक तंत्र ज्यादा तो एक कम| इसलिए कोई भी इस पोस्ट का जातिगत पटाक्षेप करने से पहले इस बात को ध्यान में रखे| लेख का मूल उद्देश्य यही बताना है कि अति हर चीज की बुरी होती है, जैसे यहां धर्म की, कि जो सती के नाम पे सामूहिक सती होने को भी सही ठहरा रही है|

Author: Phool Malik

Publisher: Nidana Heights

Dated: 05/01/2015